International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 09-12

संस्कृति की धरोहर के रूप में संगीत के विविध रूप

ममता
इस्माईल नेशनल महिला पी0 जी0 कॉलिज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
संगीत का संबंध हमारे अतीत काल से चला आ रहा है प्रारम्भ में ईश्वर की स्तुति करने के लिए गायन किया जाता था। आज इस ने जगत में विशेष महत्व बना लिया, संगीत का इतिहास बहुत ही प्राचीन है रामायण, महाभारत इत्यादि से ही अपना महत्व रखता आया है कृष्ण और गोपिकाओं की रास लीलाओं का बड़ा मनोरंजक दृश्य है, संगीत का गायन किसी ना किसी उद्देश्य को केन्द्र में रखकर ही गाया जाता था। अजंता, एलोरा की गुफाओं में आज भी इस की प्रांसगिकता दिखाई देती है। अमीर खुसरो भक्ति काल के समृद्ध व्याख्याता थे। श्लोकों का गायन भी आज समृद्ध है भारतीय साहित्य अपनी लोक संस्कृति व परम्पराओं के लिए ख्याति प्राप्त है। साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, आधुनिक काल में भी संगीत ने अपने समाज को प्रभावित किया है। भारत में जाति–भेद से ऊपर उठकर संगीत को महत्व दिया गया है साहित्य इस से समद्ध है यहाँ होली, ईद सभी पर संगीत को महत्व दिया गया है। आज भी संगीत के माध्यम से बहुत से मनोरोगों को दूर करने का काम किया जाता है, जिससे मनुष्य ही नहीं पशु भी प्रभावित होता है। मीराबाई, सूरदास, कबीर, तुलसीदास इत्यादि ने साहित्य को समृद्ध किया। जिन ग्रंथों ने पूरे जन–मानस को प्रभावित किया उन की भविष्य में भी प्रांसगिकता बनी हुई है जिससे जन–मानस गतिशील है।

मूल शब्द: संस्कृति, धरोहर, संगीत, आधुनिक

प्रस्तावना
संगीत हमारी चेतना से जुड़ा हुआ है संगीत ने मनुष्य के दिल–दिमाग पर प्रभाव डाला है साहित्य ने भी संगीत को समृद्ध किया है संगीत ने हमारी लोक कला को सहेज कर समृद्ध कर दिया, संगीत हमारी धरोहर के रूप में आज भी प्रांसगिक है महाभारत, जैन काल, बौद्ध काल के समय से ही संगीत ने मनुष्य जाति को समृद्ध किया। उपनिषदों से ही संगीत के प्रमाण हमें प्राप्त होते रहे है जो आज भी प्रांसगिक है। 'संगीत' शब्द 'गीत' शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाकर बना है। 'सम्' यानी 'सहित' और 'गीत' यानी 'गान'। 'गान के सहित' अर्थात् अंगभूत क्रियाओं (नृत्य) व वादन के साथ किया हुआ कार्य 'संगीत' कहलाता है। संगीत वह ललित कला है, जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। संगीत मानवीय लय एवं तालबद्ध अभिव्यक्ति है। भारतीय संगीत अपनी मधुरतामय लय के लिए जाना जाता है। संगीत हमारे भारतीय इतिहास के प्रारम्भ से ही हमारे साथ जुड़ा है। वैदिक काल में ही संगीत का रूप दिखायी देता है। हमारे चार वेद है उनमें से सामवेद को संगीत का संग्रह कहा जाता है। प्राचीन समय में ईश्वर की पूजा, अर्चना व भजनों के माध्यम से संगीत का रूप देखते आ रहे हैं। ये तो सब हमारे इष्ट को प्रसन्न करने का एक माध्यम था, लेकिन धार्मिक प्रवृत्ति ने इसे तोड़ कर एक लौकिक रूप दे दिया।

''सर्वप्रथम भारतीय संगीतकार जिसे हम उस समय में महत्त्व प्रदान कर सकते हैं, जयदेव ने गीत गोविन्द लिखा और गाया। इसमें श्रीकृष्ण के कवच का वर्णन है। इस प्रकार वे भक्ति मार्गी गायकों की श्रेणी में आते हैं। यद्यपि प्रत्येक गीत पर जयदेव द्वारा गाये गये राग तथा ताल का नाम लिखा है फिर भी यह आधुनिक भारतीय संगीतज्ञों की समझ से बाहर है। गीत गोविन्द एक आकर्षक संगीतमय रचना है।''[1]

भक्ति भावना के क्षेत्र में प्रचार करने वालों में जयदेव तथा अमीर खुसरो का नाम मुख्य रूप से लिया जाता हैं। 'इनका कवि तथा गायक दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है। इनका कार्यकाल 12 वीं अथवा 13 वीं शताब्दी में बताया जाता है, इन्होंने संस्कृत भाषा में गीत गोविन्द की रचना की और समस्त भारत वर्ष में महत्वपूर्ण स्थान पाया। अंग्रेजी के प्रमुख विद्वान लेखक 'एडविन आर्नओल्ड' ने इसका अंग्रेजी रूपान्तरण किया। गीत गोविन्द गीत–संग्रह है। प्रत्येक गीत में उसका अपना राग एवं ताल है। जयदेव राजा लक्ष्मण सेन के दरबारी कवि थे। गीत गोविन्द की भाषा सरल तथा सार गर्भित है।' उन्हें किसी भी ढंग से गाया जा सकता है। इस ग्रन्थ में ईश्वर भक्ति और प्रेम के भावों का प्रदर्शन किया गया है इसलिए ''संगीतकार उनके गीतों को गायन तथा वादन के साथ गायन करते हैं। इनके गीत प्रेम और ईश्वर भक्ति से ओतप्रोत हैं और राधाकृष्ण के पारस्परिक गायन करते हैं। उनके गीतों को आज पर्यटन केन्द्रों पर बड़े गौरव तथा भक्ति भाव से गाया जाता है। पुरी के जगन्नाथ मंदिर में जयदेव के भक्ति गीतों को बड़ी श्रद्धा से गाया जाता है। ''इनके गीतों ने भारतीय संगीत को एक दिशा दी उसके बाद अमीर खुसरो ने अपनी पहेली, मुकरियों से भारतीय संगीत में अपना योगदान दिया। वे एक विद्वान कवि, संगीतकार, लेखक, कुशल राजनीतिज्ञ थे। अमीर खुसरो ने हिन्दू–मुस्लिम दोनों को पास लाने का कार्य किया। ''अमीर खुसरो ने भारतीय संगीत में गायन की एक नवीन प्रणाली (कव्वाली) को सम्मिलित किया। कव्वाली हिन्दुओं के ईश्वरोपासना के लिए गाये जाने वाले और प्रभु से आशीर्वाद प्राप्त करने के भजनों के आधार पर मुसलमानी भक्ति संगीत है। आरम्भ में कव्वाली फारसी भाषा में रची तथा गायी जाती थी किन्तु बाद में इनमें उर्दू भाषा का प्रयोग किया जाने लगा।''[2] इसी प्रकार प्रारम्भ में ईश्वर, अल्लाह से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए गाये जाते थे, लेकिन धीरे–धीरे इन्होंने आज विशाल रूप ले लिया, कुछ लोग मनोरंजन के लिए भी गायन करते थे अपने मनोरंजन के लिए लोग तरह–तरह से गायन करते थे। हर प्रकार

के गीत गाये जाते थे।

प्राचीन काल से ही रामायण, महाभारत, जैन काल, बौद्ध काल इत्यादि समय में भी नृत्य व संगीत का प्रचलन था। ''रामायण के अध्ययन से ज्ञात होता है। कि नृत्य तथा संगीत बालिकाओं की शिक्षा का प्रमुख अंग था। रावण के दरबार की निवासिनी केवल सुन्दर ही नहीं थी बल्कि वे नृत्य तथा अन्य ललित कलाओं में प्रवीन होती थीं।''[3] इस प्रकार रामायण में उल्लेख है कि संगीत व नृत्य की प्रथा रामायण काल से चली आ रही है उस समय मनोरंजन के उद्देश्य से गाये जाते थे। भारत में नाटकों का प्रदर्शन श्री कृष्ण और गोपिकाओं की रास लीलाओं से ही आरम्भ माना जाता रहा है। ''हरिवंश पुराण के अनुसार– चित्रलेखा, उर्वशी, हेमा, रम्भा, मेनका, केशी और तिलोत्तमा आदि अप्सराओं के नृत्य की सूचना मिलती है। इससे प्रगट होता है कि सामान्य तथा राजकुलों की महिलाएं नृत्य, गायन तथा वादन कला से परिचित हुआ करती थीं।''[49] इसी आधार पर कहा जा सकता है कि महाभारत के समय भी स्त्री–पुरूष संगीत व नृत्य कला में अपना समय व्यतीत करते थे राजघरानों की यह परम्पराओं में शामिल था, संगीत का विस्तार उस समय भी था, लेकिन उसमें हमेशा शालीनता प्रकट होती और वे किसी ना किसी उद्देश्य के लिए गाये जाते थे उसी तरह जैन धर्म में भी महावीर स्वामी के अहिंसा, परित्याग, शुद्धता इत्यादि का प्रचार करने के लिए लोगों ने धर्म का सहारा लिया जैन धर्म के अनुयायियों ने अधिकतम व्यक्तियों को इस तरफ आकर्षित करने के लिए नृत्य तथा संगीत को अपनाया। उसी तरह बौद्ध काल ललित कलाओं का काल था महात्मा गौतम बुद्ध के बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए संगीत, गायन के माध्यम से भारत व देश विदेश में भी इसका सहारा लिया गया। इससे बौद्ध धर्म का तो प्रचार–प्रसार हुआ संगीत कला की भी वृद्धि हुई ''अजन्ता, एलोरा की गुफाओं में हुई चित्रकारी उस समय की चित्र–नृत्यकारों की विविध मुद्राएं आदि बताती हैं कि बौद्ध युग में संगीत कला उन्नत अवस्था में थी।''[4] समय का चक्र बहुत तेज गति से चलता है।

मनुष्य रामायण काल से लेकर आज तक अपने संगीत की बदौलत ही विश्व में व्याख्यत है। ज्यातर लोग गाने सुनकर अपने तनाव को कम कर लेते थे इसलिए वह संगीत को मनोरंजन का साधन बनाते थे, जो आज भी कारगर है। व्यावहारिक संगीत के क्षेत्र में एक ऐसा अल्पसंख्यक वर्ग हमेशा रहा है जिसके संगीतज्ञ विलक्षण प्रतिभा के होते हुए भी संगीत–संसार के सामने बहुत कम आये और जिनके बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी रही है। ऐसे बहुत से उदाहरण है।''तीस पैंतीस वर्ष हुए एक इस तरह के अज्ञात सरोद–वादक हुआ करते थे जिनका नाम 'चुन्नू खां' था और जिनका सरोद–वादन इतना सुरीला था कि अच्छे–अच्छे वादक उनको सुनकर अचम्भे में पड़ जाते थे।''[5] जाने ऐसे कितने 'चुन्नु खां' जैसे लोग गुमनामी की भेंट चढ़ गये जिनमें इतना टलैन्ट था जो आज के प्रतिभाशाली व्यक्ति में भी नहीं दिखायी देता, किसी को मंच नही मिला तो किसी को पारिवारिक होंसला नही मिला, और उनकी प्रतिभा ने चारदीवारी में ही अपना दम घोट दिया, आज भी हमारे भारत में प्रतिभा की कमी नहीं है, लेकिन स्थिति आज भी ऐसी ही है फर्क बस इतना है। अब राजनीति, भ्रष्टाचार, घूसखोरी की भेंट चढ़ गयी है, थोड़ा बहुत साहस किया है तो टीवी. चैनलो ने किया है जो रियल्टी शौ कर रहें हैं, कहते है ना किसी को जमीं नहीं मिली तो किसी को आकाश नही मिला, पुराणों और उपनिषदों में संगीत के प्रमाण हमें मिलते हैं। ''संगीत के मनोरंजक उपादान तीन प्राचीन उपनिषदों में उपलब्ध होते हैं छंदोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् और तैत्तिरीयोपनिषद है। छांदोग्योपनिषद् इन तीन से अधिक प्राचीन है। डॉ0 विन्टरनीट्ज के मतानुसार– छांदोग्य और बृहदारण्यक अन्य कई प्राचीन छोटे–बड़े उपनिषदों के संकलन से बने थे क्योंकि इन दोनों उपनिषदों की अनेक आख्यायिकाएँ एवं मौलिक अंश अन्य उपनिषदों में अक्षरशः मिलते हैं''[6] छांदोग्योपनिषद् में गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों का उल्लेख मिलता है। इस का सबसे बड़ा कारण था श्लोकों का जो पाठ किया जाता था वह छंदों व स्वरों के माध्यम से किया जाता था, और जिन्हें स्वर मिश्रित कंठ से गाने की सलाह दी जाती थी जिससे स्वर मधुर और सब को आकर्षित करे इसलिए अपनी वाणी को लय बद्ध तरीके से गाने की सलाह दी जाती थी, श्लोक के माध्यम से पहले वाणी को मधुर और ईश्वर की आराधना के लिए सर्वप्रिय माना जाता था इस से ईश्वर प्रसन्न होंगे यह सीख हर किसी को दी जाती थी जो यज्ञ में श्लोकों का अध्ययन करता था कि अगर मधुर वाणी से श्लोकों का वर्णन करोगें तो ईश्वर की कृपा तुम पर रहेगी। प्राचीन समय में नायिका अपने नायक पर क्रोध, प्रेम, ताना इत्यादि दिखाने के उद्देश्य से गीत गाती थी उनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष नहीं होता, अप्रत्यक्ष होता था, लेकिन नायिका जिससे प्रेम करती थी उसका प्रेमी समझ जाता था कि वह मेरे विषय में ही यह सब कह रही है–''साहित्य संगीत और सभी कलाओं में स्त्रियों का यह प्रभुत्व सर्वमान्य है। रागिणियाँ ही ज्यादा हैं। नायिकाएं ही ज्यादा है और नायिकाओं के शब्द चित्र प्रस्तुत करने वाली बन्दिशें ही ज्यादा हैं।''[7] सिख सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रन्थ 'गुरू ग्रन्थ साहब' में भी शब्द–गायन का रूप देखने को मिलता है। सिख धर्म में तो गायन का बहुत अधिक महत्व है गायन के माध्यम से सिख धर्म में विभिन्न रागों तथा तालों का उल्लेख मिलता है। ''गुरूवाणी को गाने की परम्परा का विकास मध्यकाल से ही होना आरम्भ हो गया था। मध्यकाल में सिख धर्म का प्रचार–प्रसार बढ़ने के साथ ही तबला तथा पखावज का एक वर्ग विकसित हुआ, जो शबद–कीर्तन किया करता था।''[8]

गुरूद्वारों में आज भी शबद–कीर्तन का महत्व है। जिसे आनन्द के साथ गाया जाता है। भारत की संस्कृति और कलाएं, जिन्हें मध्यकाल में राजदरबारों का संरक्षण प्राप्त था अंग्रेजों के समय इस पर विराम लगने लगा। अंग्रेजों का उद्देश्य यही था कि वह भारतीयों की कलाओं और संस्कृतियों को नष्ट कर दे। वह कामयाब भी हुए राजदरबारों में इसका पतन होने लगा संगीत कलाकारों को दिया जाने वाला संरक्षण समाप्त होने लगा था लेकिन अनेक कारण होने के बावजूद भी आधुनिक युग में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। ''वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के इस युग में इलैक्ट्रोनिक मीडिया, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन ने भी भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में पर्याप्त योगदान दिया है। ध्वयांकन के वैज्ञानिक साधनों द्वारा हम संगीत की ऑडिओ–वीडियों रिकॉर्डिंग भी कर सकते हैं। मुद्रण की तकनीक के विकास के कारण संगीत–संबंधी पुस्तकें भी सस्ते दामों पर उपलब्ध हुई हैं। इस प्रकार आधुनिक युग में संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हो रही है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के अतिरिक्त जो महत्वपूर्ण संस्थाएं संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य कर रही हैं, उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं–

1. संगीत नाटक अकादमी
2. श्रीराम भारतीय कला केन्द्र
3. गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल
4. प्रयाग संगीत समिति
5. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्

इन संस्थाओं के प्रयत्नों से भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार

देश–विदेश में हो रहा है और अब विदेशों में भी भारतीय संगीत सीखने के लिए जनरूचि बढ़ रही है।''[9]

आज विश्व भर के लोग हमारे रियल्टी शॉ में आ रहें है।अभी हाल ही में स्टार प्लस पर 'दिल है हिन्दुस्तानी' प्रसारित हो रहा है जिसमें विदेशों से आ रहे सिंगर भारतीयों को भी मात दे रहें हैं। सोलवीं शताब्दी में अपना एक विशिष्ट स्थान रखने वाले तुलसी, कबीर, सूर आदि भक्त–कवियो को विशेष स्थान रहा है। हिंदी वाड्. मय में आठ कवि 'अष्टछाप के कवि' के नाम से प्रसिद्ध हुए– सूरदास, परमानन्द दास, कुंभनदास, कृष्णदास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविन्द स्वामी और छीतस्वामी। इनमें से चार प्रथम बल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और अन्तिम चार विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। आठों भक्त कवि संगीत में निपुण थे भगवद्–भजन भक्ति–संगीत और सस्वर काव्य–पाठ में लगे रहते थे और इनके भक्त इन्हें बड़ी ही तन्मयता के साथ सुनते थे। भक्ति रस में डूबे हुए ये लोग हमेशा मधुर–कंठ से गायन करते हुए एक ओर अपने जीवनाराध्य भगवान श्रीकृष्ण का गुणगान करते थे और दूसरी और जन–साधारण को अपने कंठ से मंत्रमुगध करते थे।

''सूरदास के पदों में राग, वाद्य एवं संगीत के अनेक पारिभाषिक शब्दों को व्यवहृत होते देखकर कहा जा सकता है कि वे शास्त्रीय संगीत के पूर्ण ज्ञाता थे। सूर–मल्हार, सूरसांरग, घनाश्री, मल्लाहार गौरी, केदार, गुर्जरी आदि उनके प्रिय राग थे।''[10] भक्ति काल के कवि सूर प्रतिभा के धनी थे उनके संगीत का रूप आज भी विद्यमान है उन्होंने सम्पूर्ण जन–मानस के हृदय में भक्ति का संचार करने का कार्य किया जन–मानस के हृदय में कृष्ण–राधा द्वारा अपने संगीत को शास्त्रीय रूप देने में कारगर सिद्ध हुए। भक्ति काल के कवि ने कृष्ण–राधा को श्रद्धा के रूप में रखकर अपने पदों को संगीतमय रूप दिया, संयोग–वियोग दोनों ही रूपों में इनके गुणगान का वर्णन हमें भक्ति–काव्य में देखने को मिल जाता है। इन्होंने अपने कीर्तन में गीतमय योगदान दिया है वह सरहानीय है। गायन सीखने के लिए ये अपना गृह त्याग कर गुरू सेवा को ही अपना कार्य मानते थे। गुरू के चरणों में बैठकर ये हमेशा अपने शबद–कीर्तन में डूबे रहते थे, श्रद्धालुओं का इनके पास जमघट लगा रहता था वह इनके गायन को सुनने के लिए दूर–दूर से आते थे और श्रीनाथ जी के मन्दिर में भजन मण्डली तैयार करके कीर्तन किया करते थे। इनके राग–विराग को जन–मानस हृदय से सुनता था। इन्होंने अपना सारा जीवन भजन, कीर्तन व श्रीनाथ जी की सेवा में ही लगा दिया मृत्युपर्यान्त ये यहीं रहकर भजन–कीर्तन करते रहें और जनमानस को अपनी सेवा देते रहे। राम–भक्ति धारा में जो नाम हमारे मतिष्क पटल पर पड़ता है वह तुलसीदास जी का, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राम–भक्ति में समर्पित कर दिया था। इसका उदाहरण आज हमारे सामने रामचरितमानस है, रामचरितमानस को आज भी लोग भक्ति भाव में डूब कर गाते है और ''प्रतिवर्ष दशहरे से पूर्व रामलीला के आयोजन पर भी रामायण की चौपाईयों का गायन होता है। रामनवमी के अवसर पर भी रामायण का सस्वर पाठ किया जाता है। वस्तुतः तुलसीदास का सम्पूर्ण काव्य संगीतमय था। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में जिन रागों का वर्णन किया है, वे इस प्रकार हैं– आसावरी, कल्याण, गौरी, केदार, तौड़ी, जैत श्री, घनाश्री, नट बसन्त, बिलावल आदि।''[91] संगीत को उदात्त बनाने में तुलसीदास जी का बहुत बड़ा योगदान है रामचरितमानस ने सम्पूर्ण जन–मानस को संगीतमय रूप देने में अपना योगदान दिया है। आज घर–घर में रामचरितमानस का पाठ होता है और श्रद्धा से गाया जाता है संगीत को एक उच्चकोटि का रूप दिया, मनुष्य जाति के उद्धार में इन्होंने अपना महत्वपूर्ण योग दिया, विरह–वेदना को व्यक्त करते–करते ये कब ईश्वर की अनन्य कृपा के पात्र हो गये, और आज सम्पूर्ण जन–मानस इनके द्वारा रचित रामचरितमानस को सर–माथे से लगाता है और विविध संगीतमय रूप देता है।

भक्ति काल के कवियों ने विभिन्न सम्प्रदायों को गति दी और समाज में आध्यात्मिक आधार बनाया। इन्होंने अपनी आध्यात्मिक छठा से सम्पूर्ण जन–मानस के हृदय में निवास किया, इन्होंने संगीतमय भजन, पदों, कीर्तन इत्यादि को तन्मयता के साथ गाया चाहे वह वियोग की अवस्था रही हो चाहे संयोग की, दोनों ही अवस्था में संगीत को माध्यम बनाया जिससे सम्पूर्ण जनमानस का उद्धार हुआ।

इसी तरह मीराबाई ने अपनी मधुर गीतमयी वाणी से जनमानस में प्रभु–भक्ति का प्रकाश फैलाया जिसे आज भी मीरा के भजनों के रूप में विभिन्न संगीतज्ञ एवं गायक गाते और सुनते हैं। ''वे केवल भक्त–गायिका ही नही, अपितु उत्कृष्ट कोटि की कवयित्री और संगीतज्ञ भी थीं। उन्हीं के शब्दों में–

ततनो बनाऊँ तम्बूरो, जीवनो तार तनाबूं राम।
वन वन बाजे घूंघरा, जीवन लाड़ लड़ाबूं राम।।''[11]

मीराबाई को प्रेम–दीवानी कहा जाता है वह कृष्ण से प्रेम करती थी और अपने प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने भजनों को माध्यम बनाया, किसी जात–पात, ऊँच–नीच, भेदभाव से जनमानस के कल्याण के लिए काव्य–संगीत की रचना की। ''मीरा जानती थीं कि भगवान न तो योग से मिलेगा, न जप और न वैराग्य में,–अपितु जहाँ संगीत के माध्यम से उसके गुणों का मनोहारी गान होगा, वह वहीं निवास करेगा।''[12] अर्थात् वह अपने आराध्य को अपनी मधुर वाणी से प्रसन्न करने की अभिलाषी थी जो जनमानस के कल्याण में भी महत्व रखता है। उसी तरह महादेवी हुई जिन्होंने आधुनिक युग में अपने आराध्य के लिए भक्ति–भाव को अभिव्यक्त किया। वह तो हमेशा यही कहती भी रही हैं–''मैं नीर भरी दुःख की बदली'' वह स्वयं को विभिन्न माध्यमों में अभिव्यक्त करके अपने गीतों की अभिव्यंजना करती रही हैं। ''साहित्य और संगीत मानव को विधाता की ओर से अमूल्य वरदान है। संगीत में जिसे स्वर कहते हैं, वह एक प्रकार का वेग ही है। बाह्य अर्थों से युक्त होने पर वह आवेग के रूप में प्रकट होता है। काव्य जिस प्रकार शब्द–प्रकाश्य अर्थ द्वारा बाह्य विषय सत्ता से बाँधा जा सकता। वह अपने आपमें स्पन्दित होता है।''[13] संगीत हमारी अनुभूति को जगाता है संगीत से मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी तक भी प्रभावित होते हैं। संगीत हमारे मनोरोगों को दूर करने का भी सस्ता एवं सरल साधन है। संगीत हमारा प्राचीन काल से ही मनोरंजन तो करता ही रहा है साथ ही हमारे तनाव को दूर करने में भी कामयाब रहा है। संगीत ने पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का कारगर काम किया है। मनुष्य जाति के उद्धार में इसका सर्वोपरि स्थान रहा है।

निष्कर्ष

संगीत हमारी धरोहर के रूप में आज लोक–मानस के मन में रमा हुआ है प्राचीन काल से लेकर आज तक विभिन्न संस्थाऐं संगीत के प्रचार–प्रसार में अपना सहयोग दे रही है देश–विदेश भी भारतीय संगीत से अछूता नहीं रहा है, भारत अनेकता में एकता वाला देश कहा जाता रहा है। यहाँ जाति भेद ऊँच–नीच भेदभाव रहित समाज है चाहे स्वतन्त्रता दिवस हो या होली, ईद हो सभी को अपने धर्म से संबधित संगीत सुनने और गाने की स्वतन्त्रता मिली हुई है। संगीत का कोई मजहब नही होता आज भी इतना वर्चस्व है कि रियल्टी शौ में दूर–दूर से लोग अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे

हैं। भाषा चाहे कोई भी रही हो लेकिन संगीत जन–मानस के ह्रदय में बसता है। हमारे रीति–रिवाज धरोहर के रूप में आज भी संगीत में बसते हैं। गांवों में तो लोग राग–रागिणी के द्वारा अपना मनोरंजन करते आ रहे हैं। संगीत जनमानस का प्राणत्व है इसका प्रभाव कल भी था आज भी है, संगीत मनुष्य के ह्रदय में निवास करता है।

सन्दर्भ

1. भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतार वीर, पृष्ठ– 20
2. भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतार वीर, पृष्ठ– 88
3. भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतार वीर, पृष्ठ– 98
4. भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतार वीर, पृष्ठ– 100
5. हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न – डॉ0 सुशील कुमार चौबे, पृष्ठ– 178
6. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ0 अरूण कुमार सेन, पृष्ठ– 13
7. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ0 अरूण कुमार सेन, पृष्ठ– 162
8. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ0 अरूण कुमार सेन, पृष्ठ– 29
9. धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत – रेनू सचदेव, पृष्ठ– 31
10. धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत – रेनू सचदेव, पृष्ठ– 67
11. धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत – रेनू सचदेव, पृष्ठ– 83
12. धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत – रेनू सचदेव, पृष्ठ– 84
13. भारतीय संगीत के प्रमुख स्तम्भ –पृष्ठ– 58